2-5-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

बादल आते है। सभी तो एक जैसे नही होते। बादल भी अनेक प्रकार के होते है। यहां है ज्ञान और अनुभव की बात। सा० से कोई फायदा नही है। भक्ति मार्ग मे है नुक्सान। ज्ञान मार्ग मे है फायदा। इसको ही कहा जाता है हारजीत का खेल। दुनियां कुछ भी नही जानती। भारत इतना ऊंच था फिर इतना कंगाल क्यों हुआ है। यह खेल है। भारत तो स्वर्ग था। स्वर्ग, नर्क के यह दो अक्षर सिर्फ भारत मे ही होते है। तुम ही स्वर्गवासी फिर नर्कवासी बनते हो। और धर्म वाले स्वर्ग वासी नही बनते। गाते है गाड फादर पैराडाईज स्थापन करते है। भारत ही प्राचीन है तो जरूर भारत ही पैराडाईज होगा। परन्तु यथार्थ कोई की बुधी मे नही है। तुम बच्चो को निश्चय हुआ है कि हम नई दुनियां के मालिक बनते है। दुनियां मे कोई की भी यथार्थ रीती बुधी मे नही है। कोई भी इन बातों को नही जानते है। स्वर्ग क्या है यह भी किसीको पता नही है। ऐसे ही मुख मीठा कर लेते है कि फलाना स्वर्ग वासी हुआ। कहने मात्र कह देते है। यथार्थ किसीको भी पता नही है। सारी दुनियां मे कहने के मात्र है। इन से पेट नही भरता। यहां तुम आये हो पेट भरने। पेट खाली हो गया है। फिर बाप आये है पेट भरने। हर एक ऐसा ही अपना अनुभव सुनाते है। नम्बरवार बच्चे है। बाबा हमको पढ़ाते है। वो ही बाप टीचर गुरू है। कृष्ण बाबा नही है। राधा कृष्ण राजा रानी तो नही है। किसीको भी पता नही है। द्वापुर मे कैसे ले आये। वो तो पहले नम्बर का प्रिन्स है। यह भी बच्चे जानते है कि कृष्ण और राधा अपनी-2 राजधानी मे थे। दोनों= दोनों की स्टुडन्ट लाईफ। पढ़ते होंगे, कोई की जान पहचान हो जाती है। फ्रेण्डशिप हो जाती है तो एक दो के घर मे जाते है। तो इनका भी ऐसा होगा। फिर बाद मे स्वयंवर हुआ है। अब तुम रचता बाप को और सारी रचना को जानते हो। अभी तुम कहेंगे ब्रहम लोक हमारा घर है। हम आत्मायें वहां रहती है। स्टार के जैसे झाड़ को नम्बरवार ... है ना। यहां मनुष्य सृष्टी का झाड़ है। वहां फिर निराकार। तुमको मालूम है कि स्थापना पालना विनाश कैसे होता है। आत्मायें आती जाती है। बाप जब आते है तब सब आत्माओं को साथ मे ले जाते है। प्रलय तो होती नही है। गाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी रिपीट। तुम जानते हो कि हम ही 84जन्मों की रिपीटिशन मे आते है। आगे जो कुछ भी पता नही था। अब इनको भी मालूम है तो तुम बच्चो को भी मालूम है। तुम भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सृष्टि की आद मध्य अन्त को जानते हो। कोई की बुधी मे धारना होती है कोई को भूल जाता है। अनुभव भी यही सुनाना है कि हमने अपनी 84जन्मों की आद मध्य अन्त को जाना है। हम आत्मायें मूल वतन मे रहने वाली है। हम नंगी थी। तुम आत्मायें मूल वतन मे रहने वाली थी। फिर सतयुग मे इतने जन्म लिये। तो मनुष्य समझेंगे कि यह तो अनुभव सुनाता है कि मैंने कैसे 84जन्म लिये है। अभी हम तमोप्रधान बन गये है। यह है पुरूषोतम संगम युग। आसुरी से दैवी बनाने वाला कोई जरूर है। तुम बच्चे जानते हो कि हम अगर पूरा नही पढ़ेंगे तो देरी से आवेंगे। पुरी रीती पढ़ेंगे तो नई दुनियां मे जावेंगे। सारा मदार ही पढ़ाई पर है। हम बाबा के बच्चे है तो नई दुनियां मे क्यों नही जावें। दिन प्रति दिन कला कम होती जाती है। नई चीज को सब पसंद करते है। नये स्वर्ग मे सुख था। तो अब फिर पुरानी दुनियां को सम्पूर्ण भूलने से नई सम्पूर्ण दुनियां मे चले जाते है। भगवानोवाच् है कि मै तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। यह पढ़ाई है संगम युग की। तुम अनुभवी हो। दुनियां तो संगम युग को नही जानती है। यह एक ही संगम है जब बाप आकर सतयुग का लायक बनाते है। मूल बात है योग से पावन बनने की। बाप को याद करना कहीं भी बैठे रहो। ऐसे नही कि लैटरीन करते समय कैसे याद करे? अरे बच्चा लैटरीन करते समय बाप को भूल जावेगा क्या। परन्तु माया की आपोजिशन है जो कि भुला देती है। योग के प्रोग्राम मिलते है। यह अभयास पहले बच्चों ने बहुत किया है। भठी मे बैठे थे। और कोई कनेक्शन नही था। खुदाई परिवार था। अच्छा मात-पिता बाप दादा का सिकीलधे बच्चों को याद प्यार और गुड् नाईट